कविग्राम

वर्ष 2, अंक 10, अक्टूबर 2021

कविता में राम

विशेषांक

कविग्राम

वर्ष 2, अंक 10, अक्टूबर 2021

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
मनीषा शुक्ला

कला सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम फाउण्डेशन

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

मूल्य
निःशुल्क

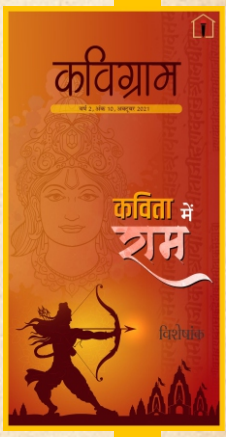

आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

हमारी वर्चुअल उपस्थिति

kavigram.com
TheKavigram@gmail.com
kavigramfoundation
facebook.com/kavigram
youtube.com/c/KaviGram
8090904560
thekavigram
thekavigram

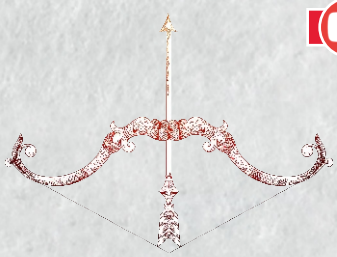

भीतर के पृष्ठों पर...

सम्पादकीय / कविता में राम / चिराग़ जैन / 04
आवरण कथा / विभिन्न भाषाओं में रामयाण / विकीपीडिया / 06
वटवृक्ष / अवध में आनन्द / राधेश्याम कथावाचक / 13
वटवृक्ष / ठुमक चलत रामचन्द्र / गोस्वामी तुलसीदास / 14
वटवृक्ष / अहल्या के प्रति / रबीन्द्रनाथ टेगोर / 15
वटवृक्ष / कैकेयी / केदारनाथ मिश्र प्रभात / 18
मुक्तक / श्रीराम बनने के लिए / चिराग़ जैन / 21
फुलवारी / कहो मंथरा! / निकुंज शर्मा / 22
वटवृक्ष / लक्ष्मण / सुमित्रानन्दन पंत / 23
गुलमोहर / केवट ने चरण पखारे हैं / बलराम श्रीवास्तव / 24
गुलमोहर / साहस / विनय विश्वास / 25
गुलमोहर / शबरी का भाग्य / विनय विश्वास / 26
वटवृक्ष / शबरी के बेर / महावीर प्रसाद मधुप / 27
मुक्तक / विभीषण / कविता तिवारी / 28
वटवृक्ष / कुंभकर्ण / ओमप्रकाश आदित्य / 29
गुलमोहर / यही रात अन्तिम / रवीन्द्र जैन / 32
फुलवारी / रावण / चिराग़ जैन / 33
गुलमोहर / सीता का उलाहना / गुणवीर राणा / 35
फुलवारी / अभिशापित राम / गजेन्द्र प्रियांशु / 36
वटवृक्ष / रीता जीवन कैसे बीते / राजगोपाल सिंह / 37
वटवृक्ष / राम की जलसमाधि / भारत भूषण / 38
गुलमोहर / वनवासी राम / राजेश चेतन / 40
कवि कुनबा कलैण्डर / अक्टूबर / 41
कवि-सम्मेलन संग्रहालय / मधुर शास्त्री / 42
धारदार / आज़ादी की दुम / घनश्याम अग्रवाल / 43
कवि-सम्मेलन समाचार / 44
कचपन / आपका दुलार चाहिए / 48
सम्पादक की पाती / 49

कविता में राम

पुनि-पुनि कहहिं-सुनहिं सब सन्ता... यह अर्द्धाली रामकथा के उस सौन्दर्य का वर्णन करती है। रामकथा का यही वह गुण है, जिस पर कवि रीझते रहे हैं। कई बार लिखी जा चुकने के बावजूद इस कथा में हर बार कोई न कोई ऐसा नया आयाम मिल ही जाता है, जिसे लिखकर कवियों को सृजन-संतोष प्राप्त होता है।

यही कारण है कि रामायण की प्रवाहमयी कथा के बीच भी कवियों ने अनेक बिन्दु ऐसे ढूंढ ही लिए जिन पर मूलकथा को अक्षुण्ण रखते हुए नये सिरे से लिखा जा सकता था। ऐसे ही सार्थक प्रयासों ने विश्व को 'राम की शक्तिपूजा' तथा 'साकेत' जैसी अद्वितीय रचनाएँ दीं। रामकथा की एक-एक घटना पर अलग-अलग दृष्टिकोण से गीत, मुक्तक, दोहे तथा छन्दमुक्त कविताएँ अनवरत लिखी जाती रही हैं।

हाँ पिछले कुछ दशकों में राजनैतिक लहर के कारण राम के चरित्र तथा राम की कथा से विलग होकर राम को एक नारे के रूप में प्रयोग करके भी कुछ साहित्य रचा गया है। यह भी सत्य है कि राम की कविता के नाम पर जब उन नारों को परोसा जाता है तो वे एक बार रामकथाधारित काव्य होने का भ्रम भी उत्पन्न कर देती हैं; किन्तु न तो उन रचनाओं की आयु रामकथा की भाँति अनन्त होती है, न ही उनकी उपादेयता सार्वभौमिक होती है। वे किसी राजनैतिक आन्दोलन की भाँति उगती हैं और राजनैतिक परिवेश बदलते ही विस्मृत हो जाती हैं।

इसी स्थिति के स्पष्टीकरणार्थ कविग्राम ने यह अंक उन रचनाओं को समर्पित किया है, जिनमें रामकथा के किसी पात्र, किसी बिम्ब अथवा किसी घटनाक्रम को आधार बनाया गया है। उत्तर रामायण में वर्णित सीता परित्याग की घटना पर अनेक कवियों ने राम को कठघरे में खड़ा किया है, किन्तु हमने इस अंक में ऐसी रचनाओं को भी प्रकाशित किया है जो इस प्रसंग पर राम का मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

राम के अप्रतिम व्यक्तित्व पर लिखी गयी कविताएँ बाबा तुलसी की साधना का ही विस्तार मात्र है। राम भारतीय संस्कृति के वह केन्द्र है,

जिस पर प्रकार की नोक टिकाकर जो भी वृत्त बनाया जाएगा, वह राम के परिधिमण्डल से कदापि बाहर नहीं जा सकेगा। इस वृत्त का क्षेत्रफल ज्यों-ज्यों बढ़ता जाएगा, त्यों-त्यों कथा के क्षुद्र पात्रों का आकार बढ़ता जाएगा।

मंथरा, सुलोचना, शबरी और केवट ही क्या सुषेण और आर्यसुमंत सरीखे पात्र भी विस्तार के साथ-साथ अधिक महत्त्वपूर्ण होते जाते हैं। जिन शत्रुघ्न को रामकथा में अधिक संवाद नहीं मिल सके हैं, उन शत्रुघ्न को भी यदि नये सिरे से किसी खण्डकाव्य, महाकाव्य अथवा गीत का नायक बनाकर सोचा जाए तो यह मौन पात्र भी अनवरत बोल सकता है। और जब कोई पात्र बोलता है तो वह कुछ भी बोल सकता है। वह मूलकथा के महानायक की भक्ति भी कर सकता है और उससे प्रश्न भी कर सकता है। नायक बनने के लिए किसी भी पात्र को दोनों ही तरफ़ अपना विस्तार करना होगा। यदि वह केवल भक्ति में संलग्न हो जाएगा तो भी उसका नायकत्व अधूरा रहेगा और यदि वह केवल आलोचना में रत हो जाएगा तो भी उसका व्यक्तित्व नायक बनने से चूक जाएगा।

साकेत की उर्मिला केवल करुणा की पात्र भर नहीं है, वह स्त्री के धैर्य तथा सहिष्णुता की जीवन्त मूर्ति भी है। और उर्मिला की सहिष्णुता को शब्दों में अवतरित करने के लिए आवश्यक है कि मूलकथा के उन अंशों को रेखांकित किया जाए, जिसमें कुछ 'सहन करने जैसा' स्पष्ट हो सके। और जिसे सहन करना पड़े वह स्थिति कम से कम सुखद तो नहीं कही जा सकती। अब यदि कोई यह आरोप लेकर बैठ जावे कि साकेत में रघुकुल में घटित घटनाक्रम की आलोचना की गयी है... तो यह कवि के साथ बेईमानी होगी। यह सृजन की संभावनाओं पर कुठाराघात होगा।

कविग्राम के प्रस्तुत अंक का उद्देश्य रामकथा में विद्यमान सृजन संभावनाओं का उदाहरण प्रस्तुत करना है। इस अंक के पृष्ठ पलटते समय इतना अवश्य ध्यान रखें कि जिसने रामकथा को अपनी लेखनी का आधार बनाया है, उसकी राम में आस्था कम से कम उनसे तो अधिक होगी जो राम का उपयोग केवल किसी लौकिक प्रयोजन हेतु करने में रत हैं।

विभिन्न भाषाओं में रामायण

साभार : विकीपीडिया

भिन्न-भिन्न प्रकार से गिनने पर रामायण तीन सौ से लेकर एक हज़ार तक की संख्या में विविध रूपों में मिलती हैं। इनमें से संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण (आर्ष रामायण) सबसे प्राचीन मानी जाती है।

साहित्यिक शोध के क्षेत्र में भगवान राम के बारे में आधिकारिक रूप से जानने का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण है। इस गौरव ग्रन्थ के कारण वाल्मीकि दुनिया के आदिकवि माने जाते हैं। श्रीराम-कथा केवल वाल्मीकीय रामायण तक सीमित न रही, बल्कि मुनि व्यास रचित महाभारत में भी 'रामोपाख्यान' के रूप में आरण्यकपर्व (वन पर्व) में यह कथा वर्णित हुई है। इसके अतिरिक्त 'द्रोण पर्व' तथा 'शान्तिपर्व' में रामकथा के सन्दर्भ उपलब्ध हैं।

बौद्ध परम्परा में श्रीराम से सम्बन्धित दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ कथानक नामक तीन जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी ये ग्रन्थ इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। जैन साहित्य में राम-कथा सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे गये, जिनमें मुख्य हैं– विमलसूरि कृत 'पउमचरियं' (प्राकृत), आचार्य रविषेण कृत 'पद्मपुराण' (संस्कृत), स्वयंभू कृत 'पउमचरिउ' (अपभ्रंश), रामचन्द्र चरित्र पुराण तथा गुणभद्र कृत उत्तर पुराण (संस्कृत)। जैन परम्परा के अनुसार राम का मूल नाम 'पद्म' था। परमार भोज ने भी चम्पु रामायण की रचना की थी।

राम-कथा अन्य अनेक भारतीय भाषाओं में भी लिखी गयी। हिन्दी में कम से कम 11, मराठी में 8, बांग्ला में 25, तमिल में 12, तेलुगु में 12 तथा उड़िया में 6 रामायणें मिलती हैं। हिन्दी में लिखित गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस ने उत्तर भारत में विशेष स्थान पाया। इसके अतिरिक्त भी संस्कृत, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, उर्दू, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं में राम-कथा लिखी गयी।

महाकवि कालिदास, भास, भट्ट, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, भवभूति, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, गुणादत्त, नारद, लोमेश, मैथिलीशरण गुप्त, केशवदास, समर्थ रामदास, सन्त तुकडोजी महाराज आदि चार सौ से अधिक कवियों तथा सन्तों ने अलग-अलग भाषाओं में राम तथा रामायण के दूसरे पात्रों के बारे में काव्य / कविताओं की रचना की है। स्वामी करपात्री ने 'रामायण मीमांसा' की रचना करके उसमें रामगाथा को एक वैज्ञानिक आयामाधारित विवेचन दिया। वर्तमान में प्रचलित बहुत से राम-कथानकों में आर्ष रामायण, अद्‌भुत रामायण, कृत्तिवास रामायण, बिलंका रामायण, मैथिल रामायण, सर्वार्थ रामायण, तत्वार्थ रामायण, प्रेम रामायण, संजीवनी रामायण, उत्तर रामचरितम्, रघुवंशम्, प्रतिमानाटकम्, कम्ब रामायण, भुशुण्डि रामायण, अध्यात्म रामायण, राधेश्याम रामायण, श्रीराघवेंद्रचरितम्, मन्त्र रामायण, योगवाशिष्ठ रामायण, हनुमन्नाटकम्, आनन्द रामायण, अभिषेकनाटकम्, जानकीहरणम् आदि मुख्य हैं।

विदेशों में भी तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्किस्तान की खोतानी रामायण, इण्डोनेशिया की ककबिन रामायण, जावा का सेरतराम, सैरीराम, रामकेलिंग, पातानी राम-कथा, इण्डोचायना की रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमैर रामायण, बर्मा (म्यांम्मार) की यूतोकी रामयागन, थाईलैंण्ड की रामकियेन आदि रामचरित्र का बखूबी बखान करती हैं। इसके अलावा विद्वानों का ऐसा भी मानना है कि ग्रीस के कवि होमर का प्राचीन काव्य इलियड, रोम के कवि नोनस की कृति डायोनीशिया तथा रामायण की कथा में अद्‌भुत समानता है।

विश्व साहित्य में इतने विशाल एवं विस्तृत रूप से विभिन्न देशों में विभिन्न कवियों / लेखकों द्वारा राम के अलावा किसी और चरित्र का इतनी श्रद्धा से वर्णन न किया गया।

भारत मे स्वातन्त्र्योत्तर काल मे संस्कृत में राम-कथा पर आधारित अनेक महाकाव्य लिखे गये हैं। उनमे रामकीर्ति, रामाश्वमेधीयम्, श्रीमद्‌भार्गवराघवीयम्, जानकीजीवनम, सीताचरितम्, उर्मिलीयम्, रघुकुलकथावल्ली, सीतास्वयम्बरम्, रामरसायण्, सीतारामीयम्, साकेतसौरभम् आदि प्रमुख हैं। डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी रचित साकेतसौरभ महाकाव्य रचना शैली और कथानक के कारण विशिष्ट है। नाग प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित ये महाकाव्य संस्कृत-हिन्दी में समानान्तर रूप में है।

राम-कथा पर आधारित ग्रन्थ

वाल्मीकि रामायण	वाल्मीकि	संस्कृत
योगवासिष्ठ या 'वशिष्ठ रामायण'	वाल्मीकि	संस्कृत
अध्यात्म रामायण	वेदव्यास	संस्कृत
आनन्द रामायण	वाल्मीकि	संस्कृत
अगस्त्य रामायण	वाल्मीकि	संस्कृत
अद्‌भुत रामायण	वाल्मीकि	संस्कृत
आर्ष रामायण	वाल्मीकि	संस्कृत
रघुवंश	कालिदास	संस्कृत
उत्तर पुराण	गुणभद्र	संस्कृत
पद्‌मपुराण	रविषेण	संस्कृत
पउमचरियं	विमलसूरि	प्राकृत
पउमचरिउ	स्वयंभू	अपभ्रंश
रामचरितमानस	तुलसीदास	अवधी
राधेश्याम रामायण	राधेश्याम	हिन्दी
रावण मन्दोदरी संवाद	श्रीधर	गुजराती
रामप्रबन्ध	मीठा	गुजराती
रामायणपुराण	स्वयंभूदेव	गुजराती
राम बालचरित	भालण	गुजराती
रामविवाह	भालण	गुजराती
रामायण	नाकर	गुजराती
लवकुशाख्यान	भालण	गुजराती
रामायण	कहान	गुजराती
रामायण	उद्धव	गुजराती
रामायण	विष्णुदास	गुजराती
अंगदविष्टि	विष्णुदास	गुजराती
लवकुशाख्यान	विष्णुदास	गुजराती
रामविवाह	वैकुंठ	गुजराती
सीतानो सोहलो	तुलसी	गुजराती
परशुराम आख्यान	शिवदास	गुजराती
महीरावण आख्यान	राणासुत	गुजराती
सीतास्वयंवर	हरिराम	गुजराती
सीतानां सन्देशा	वजियो	गुजराती
रणजंग	वजियो	गुजराती

सीतावेल	वजियो	गुजराती
सीतानो सन्देशो	मंडण	गुजराती
रावण मन्दोदरी संवाद	प्रभाशंकर	गुजराती
रामचरित्र	देवविजयगणि	गुजराती
रामरास	चन्द्रगणि	गुजराती
अंजनासुन्दरीप्रबन्ध	गुणशील	गुजराती
सीताराम रास	बालकवि	गुजराती
अंगदविष्टि	कनकसुन्दर	गुजराती
रामसीताप्रबन्ध	समयसुन्दर	गुजराती
रामयशोरसायन	केशराज	गुजराती
सीताविरह	हरिदास	गुजराती
सीताहरण	जयसागर	गुजराती
सीताहरण	कर्मण	गुजराती
ऋषिश्रंग आख्यान	प्रेमानंद	गुजराती
रणयज्ञ	प्रेमानंद	गुजराती
गुजराती योगवासिष्ठ	रामभक्त	गुजराती
रावण मंदोदरी संवाद	शामलभट्ट	गुजराती
अंगदविष्टि	शामलभट्ट	गुजराती
सीतास्वयंवर	कालीदास	गुजराती
सीतामंगल	पुरीबा	गुजराती
सीतानी कांचली	कृष्णाबा	गुजराती
सीताविवाह	कृष्णाबा	गुजराती
रामकथा	राजाराम	गुजराती
रामविवाह	वल्लभ	गुजराती
रामचरित्र	रणछोड़	गुजराती
सीताना बारमास	रामैया	गुजराती
रामायण	गिरधर	गुजराती
राम बलकिया		गुजराती
जगमोहन रामायण या दाण्डि रामायण	बलराम दास	ओड़िया
बिशि रामायण	बिश्वनाथ खुंटिआ	ओड़िया
सुचित्र रामायण	हरिहर	ओड़िया
कृष्ण रामायण	कृष्णचरण पट्टनायक	ओड़िया
केशब रामायण	केशब पट्टनायक	ओड़िया
रामचन्द्र बिहार	चिन्तामणि	ओड़िया

रघुनाथ बिलास	धनंजय भंज	ओड़िया
बैदेहीशबिलास	उपेन्द्र भंज	ओड़िया
नृसिंह पुराण	पीताम्बर दास	ओड़िया
रामरसामृत सिन्धु	काह्नु दास	ओड़िया
रामरसामृत	राम दास	ओड़िया
रामलीला	पीताम्बर राजेन्द्र	ओड़िया
बाल रामायण	बलराम दास	ओड़िया
बिलंका रामायण	शारलादास	ओड़िया
भास्कर रामायण		तेलुगु
रंगनाथ रामायण		तेलुगु
रघुनाथ रामायणम्		तेलुगु
भोल्ल रामायण		तेलुगु
कुमुदेन्दु रामायण		कन्नड़
तोरवे रामायण		कन्नड़
रामचन्द्र चरित पुराण		कन्नड़
बत्तलेश्वर रामायण		कन्नड़
कथा रामायण		असमिया
कृत्तिवास रामायण		बांग्ला
भावार्थ रामायण		मराठी
रामावतार या गोबिन्द रामायण	गुरु गोबिंद सिंह	पंजाबी
रामावतार चरित		कश्मीरी
रामचरितम्		मलयालम
रामावतारम् या कंबरामायण		तमिल
रामायण	चन्दा झा	मैथिली
मन्त्र रामायण	नीलकण्ठ सूरि	संस्कृत
चम्पू रामायण	राज भोज	संस्कृत
प्रतिमा नाटक	भास	संस्कृत
अभिषेक नाटक	भास	संस्कृत
महावीर चरित	भवभूति	संस्कृत
उत्तररामचरित	भवभूति	संस्कृत
यज्ञफल नाटक	भास	संस्कृत
कुन्दमाला नाटक	दिंन्नाग	संस्कृत
जनकजानन्दम्	कलयलक्ष्मी नृसिंह	संस्कृत
रामाभ्युदय	यशोवर्मन	संस्कृत

रामाभ्युदय	रामदेव व्यास	संस्कृत
स्वप्नदशानन	भीमट	संस्कृत
मैथिलीकल्याणम्	हस्तिमल्ल	संस्कृत
उदात्त राघव	अनंगहर्ष	संस्कृत
आश्चर्य चूड़ामणि	शक्तिभद्र	संस्कृत
कृत्यारावण		संस्कृत
मायापुष्पक		संस्कृत
रामान्द	श्रीगदित	संस्कृत
अनर्धराघव	मुरारी	संस्कृत
बालरामायण	राजशेखर	संस्कृत
अभिनवराघव	क्षीरस्वामी	संस्कृत
वालीवधम्		संस्कृत
मारीचावंचिक		संस्कृत
प्रसन्नराघव	जयदेव	संस्कृत
रघुविलास	रामचन्द्रसूरि	संस्कृत
राधवाभ्युदय	रामचन्द्रसूरि	संस्कृत
राधवाभ्युदय	गंगाधर	संस्कृत
राधवाभ्युदय	भगवान राया	संस्कृत
राधवाभ्युदय	वेंकटेश्वर	संस्कृत
जानकीराघव	रामसिंह	संस्कृत
रामविक्रम		संस्कृत
दूतांगद	सुभट	संस्कृत
दूतांगद	रामचन्द्र	संस्कृत
अमोधराघव		संस्कृत
अभिरामराघव		संस्कृत
उल्लाधराघव	सोमेश्वर	संस्कृत
उन्मत्तराघव	भास्कर	संस्कृत
उन्मत्तराघव	महादेव	संस्कृत
आनंदराघव	राजचूडामणि	संस्कृत
अभिराममणि	सुंदरमिश्र	संस्कृत
अद्भूतदर्पण	महादेव	संस्कृत
जानकीपरिणय	रामभद्र दिक्षित	संस्कृत
राघवान्द	वेंकटेश्वर	संस्कृत
महानाटक		संस्कृत

मुग़ल रामायण

अकबर ने नवम्बर 1588 में सचित्र रामायण का फ़ारसी भाषा में अनुवाद पूर्ण करवाया था जो हाल में जयपुर महल संग्रहालय में है। इस रामायण में 365 पृष्ठ हैं। इसमें 176 चित्र हैं, जिसके मुख्य चित्रकार लाल , केशव और बसावन हैं।

क़तर के दोहा मे भी मुग़ल रामायण है, जो अकबर की माँ हमीदा बानो बेग़म के लिए बनायी गयी थी। जो 16 मई 1594 को पूर्ण हुयी।

अब्दुल रहीम ने भी सचित्र रामायण का अनुवाद करवाया था जो वर्तमान समय मे 'फ़्रिर गैलरी ऑफ़ आर्ट' वाशिंगटन में है। इस रामायण के मुख्य चित्रकार श्याम सुंदर हैं।

'चेस्टर बेट्टी लाइब्रेरी, डबलिन' में एक लघु योगवसिष्ठ रामायण है, जो अकबर और जहाँगीर की है। इस रामायण में 41 चित्र हैं।

भारत के बाहर रामायण

रामायण : भनुभक्त	नेपाली
सुन्दरानन्द रामायण	नेपाली
आदर्श राघव	नेपाली
रामायण : सिद्धिदास महाजु	नेपाली
रामकर	कम्बोडिया
तिब्बती रामायण	तिब्बती
खोतानीरामायण	पूर्वी तुर्किस्तान
ककबिनरामायण	इण्डोनेशिया
सेरतराम	जावा
सैरीराम	जावा
रामकेलिंग	जावा
पातानीरामकथा	जावा
रामकेर्ति (रामकीर्ति)	इण्डोचायना
खमैररामायण	इण्डोचायना
यूतोकी रामयागन	बर्मा (म्यांम्मार)
रामवथ्थु	बर्मा (म्यांम्मार)
महा राम	बर्मा (म्यांम्मार)
रामकियेन	थाईलैण्ड

साभार : विकीपीडिया

अवध में आनन्द

अवध में है आनन्द छाया
लाल कौशल्या ने जाया

देख अनूप रूप बालक का चकित हुआ रनिवास
समाचार सर्वत्र सुनाने धाये दासी-दास
सन्देश नृप को पहुँचाया
लाल कौशल्या ने जाया

बजी झांझ-दुन्दुभी-भेरियाँ, छिड़े मांगलिक गान
दशरथ को आनन्द आज है ब्रह्मानन्द समान
नन्दन ने नयनांजन पाया
लाल कौशल्या ने जाया

ध्वज, पताक, तोरण, कलशादिक सोहे वन्दनवार
मागध सूत, बन्दि गुण गावें भीड़ भूप के द्वार
ख़ज़ाना नृप ने खुलवाया
लाल कौशल्या ने जाया

सुमन-वृष्टि करते थे सुरगण कह जय जगदाधार
निराकार निर्लेप निरंजन, हुआ सगुण साकार
विश्व में विशम्भर आया
लाल कौशल्या ने जाया

सभी प्रजावासी निज-निज गृह सजा रहे सानन्द
घर-घर मानो पुत्र हुआ है, ऐसा है आनन्द
बधावा 'राधेश्याम' गाया
लाल कौशल्या ने जाया

साभार : राधेश्याम रामायण

ठुमक चलत रामचन्द्र

ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ

किलकि-किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय
धाय मात गोद लेत, दशरथ की रनियाँ
ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ

अंचल रज अंग झारि, विविध भाँति सो दुलारि
तन-मन-धन वारि-वारि, कहत मृदु बचनियाँ
ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ

विद्रुम से अरुण अधर, बोलत मुख मधुर-मधुर
सुभग नासिका में चारु, लटकत लटकनियाँ
ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ

तुलसीदास अति आनन्द, देख के मुखारविन्द
रघुबर की छबि समान, रघुबर छबि बनियाँ
ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ

गोस्वामी तुलसीदास

अहल्या के प्रति

किस सपने में तुमने लम्बी दिवा-रात्रि काट दी?
अहल्ये! शिला-रूप से मिट्टी में मिली हुई
तुम तापस-विहीन उस शून्य तपोवन की छाया में कैसे रहीं
जिसकी हवन-शिखाएँ निर्वापित हो चुकी थीं?

बृहत् पृथ्वी के साथ तुम एकदेह होकर विलीन थीं।
उस समय उसके महास्नेह को तुमने समझा क्या?
पाषाण के नीचे क्या कोई अस्फुट चेतना भी शेष थी?

जीवधात्री माता की जो बड़ी वेदना है,
मात्र धैर्य में जो नीरव सुख और दु:ख है,
सोयी हुई आत्मा के भीतर
क्या स्वप्न के समान उसका अनुभव किया था?

दिन-रात लाखों-करोड़ों प्राणियों के मिलन और कलह—
आनन्द और विषाद से व्यग्र क्रन्दन और गर्जन
असंख्य पथिकों की क्षण-क्षण उठने वाली पदचाप,
ये क्या शापनिद्रा को भेदकर
तुम्हारी स्मृतियों में प्रवेश करते थे,
नेत्रहीन, मूढ़ एवं जड़ अर्द्धचेतना की स्थिति में
तुम्हें जगाये रहते थे?
महाजननी की नित्य निद्राहीन व्यथा को
अपने मन से तुम क्या जान सकी थीं?
नवीन वासन्त वायु के बहने पर
पृथ्वी के सर्वांग में उठने वाला पुलक-प्रवाह
क्या तुम्हारा भी स्पर्श करता था?

मरु पर दिग्विजय के हेतु जब जीवनोत्साह
सहस्र मार्गों से, सहस्र रूपों में, वेग से छूटता होगा
तब वह अनुर्वर अभिशाप को मेटने के लिए
शुद्ध होकर तुम्हारे पाषाण को घेर लेता होगा।
तो क्या उस आघात से तुम्हारी देह में जीवन का कंप जागता था?

मानव गृह में जब रात्रि का आगमन होता,
पृथ्वी श्रान्त देहों को अपने हृदय से लगा लेती
दु:ख और क्लान्ति भूलकर असंख्य जीव निद्रित हो जाते,
केवल आकाश जगता रहता,
उनके शिथिल अंग और सुषुप्ति के नि:श्वास
पृथ्वी के हृदय को विभोर कर देते
मातृ-अंग में निहित करोड़ों जीवों के उस स्पर्शसुख में से कुछ को
क्या तुमने अपने भीतर पाया था?

जिस गोपन अन्त:पुर में माता विराजती है—
वह अन्त:पुर, जो विविध रंगों की लेखा से युक्त,
पत्र-पुष्प-जल की चित्र-विचित्र यवनिका से आवृत्त है,
जिसके अन्तराल में असूर्यंपश्या-रूप से
माता चुप-चुप अपने सन्तान गृह को
धन-धान्य तथा जीवन-यौवन से भरती रहती है—
उसी गूढ़ मातृ-कक्ष में
तुम इतने दिन पृथ्वी के वक्ष में
दीर्घ रजनी की शीतलता से युक्त विस्मृति-भवन में सोयी हुई थी
वह विस्मृति-भवन,
जहाँ लाखों जीवनों की क्लान्ति अनन्त काल तक
धूलि-शैया पर निर्भय सोती रहती है,
जहाँ क्षण-क्षण दिवा-निधाघ से सूखे फूल,
दग्ध उल्का तारा, जीर्ण कीर्ति, श्रान्त सुख
और दाह से पराजित दु:ख झरते रहते हैं,
माता ने वहाँ पाप-ताप की रेखा को
अपने स्निग्ध हाथों से पोंछ दिया है।
तभी आज तुम पृथ्वी की सद्य:जात,
सुन्दर, सरल, शुभ्र कुमारी के समान दिखाई पड़ी।

निर्वाक् होकर
तुम प्रभातकालीन जगत् की ओर देख रही हो।
रात के समय जो ओस तुम्हारे पाषाण पर पड़ी थी,
अभी वह आजानु-चुम्बित कृष्ण केश-पाश में
उल्लास से काँप रही है।
जिस शैवाल ने
पृथ्वी के श्याम-शोभी अंचल के समान तुम्हें ढक रखा था,
अनेक वर्षों तक प्रचुर वृष्टि-धार पाकर
वह और भी सरस, सघन और सतेज हो गया।
माता के द्वारा सुकोमल स्नेह से दिये गये वस्त्र के समान
वह अभी भी तुम्हारी नग्न-गौर देह से लगा हुआ है।
संसार सुपरिचित हँसी हँसता है।
तुम निर्निमेष देख रही हो।
अपनी धूलि लिप्त पद-चिह्न रेखाओं को
पद-पद पर पहचानता हुआ
तुम्हारा हृदय अकेला ही
किसी कालक्षेत्र में दूर चला गया है।

जगत् का जितना भी पूर्व परिचय था,
देखते-देखते वह चारों ओर से आ जुटा।
वह देखो, दल बान्ध-बान्ध कर
समस्त संसार तुम्हारे सामने आ पहुँचा।
पास आते ही वह चौंक कर ठहर गया।
विस्मय के मारे उसके नेत्र खुले रह गये।

अपूर्व रहस्यमयी निर्वसत प्रतिमे!
तुम नवीन शैशव में स्नात पूर्ण यौवन-सी लगती हो,
मानो, पूर्ण-स्फुट, पवित्र श्याम-पत्र के पुट में
एक ही वृन्त पर शैशव और यौवन मिलकर खिल उठे हों।
विस्मृति-समुद्र के नीले जल में
तुम प्रथम उषा के समान धीरे-से उग आयी हो।

साभार : रवीन्द्रनाथ की कविताएँ; साहित्य अकादमी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

कैकेयी

मैं न सोचती बात स्वर्ग की, अलका की अथवा अम्बर की
मैं न सोचती बात विहँसते तारों के आलोकित घर की
मैं न सोचती बात अवध की या विशाल इस राजमहल की
गली-गली जिससे गुंजित है, उस उमंग-जय-कोलाहल की
सोच रही हूँ — भाग्यहीन-सा, ठुकराया-सा, छला हुआ-सा
भूमि-भाग वह कहीं खड़ा है, नियति-वह्नि में जला हुआ-सा

जहाँ मिली वरदान-रूप में, असह यातना, दु:सह पीड़ा
जहाँ दु:खी मानव का जीवन बना अमानव की लघु क्रीड़ा
जहाँ वेदना करुण दृगों से बन आँसू की धारा बहती
जहाँ बन्दिनी-सी नित धरती रक्त-घूँट पी-पी कर रहती
जहाँ विषमता भ्रमित ज्ञान की फहराती है विजय-पताका
मनुज-रक्त से लिखा जा रहा महाकरुण इतिहास जहाँ का
जहाँ अहिंसा साँस तोड़ती, हिंसा जहाँ फूलती-फलती
दानव अट्टहास करता है, जहाँ चिता मानव की जलती
जहाँ प्रार्थना की छाती में छुरी दम्भ की भोंकी जाती
क्रूर दमन की भट्ठी में नित जहाँ शांति है झोंकी जाती
राजमहल में नक्षत्रों से यदि मैं दीपावली मनाऊँ
साज सजा कर आज अवध को यदि मैं अलकापुरी बनाऊँ
यदि विमुग्ध शृंगारमयी-सी रूप-गर्विता-सी मुस्काऊँ
वैभव के छवि-मद में डूबी यदि स्वभाग्य पर मैं इठलाऊँ
राजन्! तो मानवता के प्रति क्या अन्याय महान न होगा
जीवन जिसका है प्रतीक, क्या यह उसका अपमान न होगा
क्या समाज के भग्न हृदय पर यह भीषण आघात न होगा
विकल विश्व की आशाओं पर क्या यह उल्कापात न होगा

मेरे मन का एक स्वप्न है, उसे आप क्या पूर्ण करेंगे
इस भिखारिणी की झोली को, आशा करूँ कि आप भरेंगे
राजतिलक रुक जाय राम का, हो आदेश अयोध्या छोड़ें
राजतिलक की बेला में वे सिंहासन का बन्धन तोड़ें

दशरथ की आँखों के सम्मुख, अकस्मात छा गया अंधेरा
एक साथ ही चिन्ता ने, दुःख ने, विमर्ष ने आकर घेरा
ऐसा लगा कि पग के नीचे, धरती डगमग डोल रही है
चारों ओर नियति की छाया पिशाचिनी-सी बोल रही है
चलने लगीं वेग से साँसें, लगी लड़खड़ाने-सी वाणी
संशय उठा हृदय में, सम्मुख माता खड़ी या कि पाषाणी
खड़ी सामने जो, यह ममता या है किसी शाप की ज्वाला
अमृत-पात्र उसके हाथों में या विनाश के विष का प्याला
आँखों में वरदान उमड़ता या कि झूमता काल भयंकर
अधरों पर मुस्कान खेलती या रौरव का अनल प्रलयंकर
बोले– "भद्रे! आज अचानक तुमने प्रश्न उठाया कैसा
रूप तुम्हारी इच्छाओं का मैंने कभी न देखा ऐसा
स्वप्न तुम्हारे राजहंस-सा रहे आज तक चुगते मोती
वन्य फलों का, नक्षत्रों का तुम पहले थीं हार पिरोती
चाह बन गयी आज तुम्हारी अकस्मात् क्यों आँच प्रलय की
सूख गयी क्यों निमिष-मात्र में धार सुधासित पुत्र-प्रणय की
जिस पर सुख समस्त तुम अपना कल तक करती रहीं निछावर
आज उसी के लिए बन गयीं बोलो, किस प्रकार तुम पत्थर
कैसे माता के स्नेह को चूर-चूर तुमने कर डाला
हाय! दे रही हो तुम कैसे आज पुत्र को देश-निकाला
तुम कहतीं तो पलक मारते जीत स्वर्ग को मैं ले आता
तुम कहतीं तो अखिल विश्व का वैभव तुम पर प्रिये! लुटाता
तुम कहतीं तो रत्न सिन्धु से छीन तुम्हारे आगे धरता
प्रेयसि! सुख के लिए तुम्हारे असन्तुष्ट मैं विधि को करता
किंतु छोड़कर सब कुछ तुमने किस मुँह से यह बात निकाली
मांग रही हो भिखारिणी के नाते कैसी भीख निराली
भीख मांग लो तन-मन-धन की, भीख मांग लो इन प्राणों की
किन्तु राम की भीख न मांगो, उपमा बनो न पाषाणों की"

"मैं न राम को मांग रही हूँ, मांग रही है जिसकी वाणी
वह है युग की सजग चेतना, महाशक्ति युग की कल्याणी
वह है युग की प्रबल प्रेरणा, युग के अरुणोदय की लाली
वह है युग की क्रान्ति-तपस्या, आग न जिसकी मिटनेवाली
युग आँखों का अश्रु नहीं है, महाज्वार वह है सागर का
वह ममत्व है नहीं हृदय का, है प्रणाद वह वह्नि-शिखर का
वह गति नहीं थकित चरणों की, प्रगति तूर्ण वह प्रलय पवन की
वह सुरचाप नहीं सपनों का, प्रखर ज्योति वह ग्रीष्म गगन की
वह मुस्कान नहीं उषा की, वह न चान्दनी का आकर्षण
गौरव का निंडाभ्र प्रबल वह, मूर्तिमान भीष्मोग्र प्रवर्तन
युग ताके तो अम्बर काँपे, पत्र-सरीखी पृथ्वी डोले
युग बोले तो प्रतिध्वनित हो पंचतत्व की वाणी बोले
युग ताके तो भानु भीत हो लहरें महासिन्धु की जागें
ध्वंस, नाश, संहार त्रस्त हों, भय से अशुभ शक्तियाँ भागें
युग संकेत करे तो दौड़े पूर्ण-तूर्ण गति मेघ-महीधर
प्रलय-नृत्य आरम्भ करें द्रुत महाप्रलय के प्रभु शिवशंकर
मैं युग की संदेश-वाहिनी, मैं युग के चरणों की रेखा
मेरे इन आकुल नयनों में, क्या न आपने युग को देखा।"

"क्या न मांग है यह भी युग की राम रहें साकेतपुरी में
जिस प्रकार रहते तारापति नक्षत्रों की उस नगरी में
राजमुकुट की तरल दीप्ति में मूक स्वरों में सिंहासन के
क्या न मांग गुंजित है युग की मुखर कण्ठ में राजभवन के"

"राजमुकुट की तरल दीप्ति में, मुखर कंठ में राजभवन के
युग बसता है नहीं अंक में, स्वर्ण-विमंडित सिंहासन के
पर्ण-कुटीरों में युग बसता, जहाँ अश्रु के दीपक जलते
अंगारों पर जहाँ प्रज्ज्वलित देव-दूत वन मानव चलते
दानव जहाँ रक्त का प्यासा मनुज-प्रेम की चिता जलाता
शीश भेंट देने को अपना मानव जहाँ खड़ा मुस्काता
गूंज रही है जहाँ धरित्री, गूंज रहा नभ हाहा-रव से
जहाँ बीच लपटों के मानव लोहा लेता है दानव से
युग बसता है वहाँ, जहाँ की छाया भी काली होती है
दानवता जय-पर्व मनाती, मानवता घुल-घुल रोती है

युग बसता है महाप्रलय के, पन्नग के-से फुफकारों में
मरुत्प्रहारों में विनाश के, महानाश के अंगारों में
युग बसता है बलि-प्रदीप में, बलि-प्रदीप की ज्वालाओं में
युग बसता है बलिदानों में, विभा-बलित बलिशालाओं में
सुन युग का आह्वान भेंट में धर्मवीर हैं मस्तक देते
सुन पुकार युग की, आंधी में कर्मवीर हैं नौका खेते
युग की आज्ञा हुयी, चले बल-वीर मृत्यु को गले लगाने
शूली पर चढ़ने, भालों की, तलवारों की प्यास बुझाने
युग ने फूँका शंख ज्वार-सा उठा अचानक हृदय-हृदय में
चमकी इरम्मद की ज्वाला, फैली समस्त जीवन की लय में
युग का मिला निमन्त्रण पौरुष लगा तैरने शोणित-जल में
युग ने इंगित किया, बन गयी धुरी बाँह रानी की पल में
जब-जब युग की जिह्वा डोली, राजमुकुट पौरुष ने छोड़ा
राष्ट्रदेवता को प्रणाम कर सिंहासन का बन्धन तोड़ा
जब-जब युग की जिह्वा डोली, पौरुष बना आग वसुधा की
कालसिंधु का गरल पी लिया, अग-जग को दी भेंट सुधा की"

"मुझे गर्व है प्रिये! कि तुमने सुन ली मानवता की वाणी
मुझे गर्व है, तुम रानी हो और साथ ही हो क्षत्राणी
केवल रमा नहीं हो प्रेयसि! और न तुम केवल कल्याणी
मुझे गर्व है, प्रिये! कि तुम हो महाशक्ति-रूपा रुद्राणी
बहुत बार है स्वर्ग लुटाया सुमुखि! तुम्हारी चल चितवन पर
भृकुटि भंग पर आज तुम्हारे कहो, कहो, क्या करूँ निछावर"

● केदारनाथ मिश्र प्रभात

...श्रीराम बनने के लिए

त्याग दी हर कामना, निष्काम बनने के लिए
तीन पहरों तक तपा दिन, शाम बनने के लिए
घर, नगर, परिवार, ममता, प्रेम, अपनापन, दुलार
राम ने खोया बहुत, श्रीराम बनने के लिए

● चिराग़ जैन

कहो मंथरा!

कहो मंथरा!
रानी के कानों को भरकर,
अवधपुरी को यूँ सुलगाकर क्या पाया है?

राम तपे वन में जा, तो शीतलता पाई?
या दशरथ ने प्राण तजे तो, उम्र बढ़ी है?
ममता के वरदानों को अभिशाप बनाकर
इतिहासों में कोई अनुपम रीति गढ़ी है?
लालच की चौसर पर छल की चालें चल कर
रघुकुल पर लांछन लगवाकर क्या पाया है ?

जनकसुता की निन्दा करके वैभव पाया?
छोटी माँ की मति छोटी कर सुख पाये हैं?
तुम बतलाओ इस करतब की यशगाथा के
कितने वेद पुराणों ने मंगल गाये हैं?
वैदेही का घर छुड़वाकर, बोलो धोबी
पावनता पर प्रश्न उठाकर क्या पाया है?

इतिहासों ने केवल दुत्कारा है उनको
आग लगाने वाले कब पूजित होते हैं!
निन्दक को सम्मान नहीं मिलता है जग में
व्यर्थ मनुज का जन्म लिए जीवन खोते हैं
दुनिया भर में आग लगानेवालो सोचो—
तुमने इस दुनिया में आकर क्या पाया है?

निकुंज शर्मा

लक्ष्मण

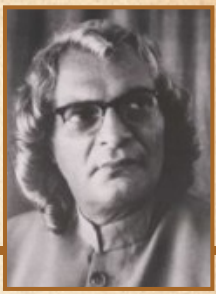

विश्व श्याम जीवन के जलधर, राम प्रणम्य, राम हैं ईश्वर
लक्ष्मण निर्मल स्नेह सरोवर, करुणा सागर से भी सुन्दर
सीता के चेतना जागरण, राम हिमालय से चिर पावन
मेरे मन के मानव लक्ष्मण, ईश्वरत्व भी जिन्हें समर्पण
धीर, वीर अपने पर निर्भर, झुका अहम् धनुधर सेवा शर
कब से भू पर रहे वे विचर, लक्ष्मण सच्चे भ्राता, सहचर
युग युग से चिर असि व्रतचारी, जग जीवन विघ्नों के हारी
जन सेवा उनकी प्रिय नारी, वह उर्मिला, हृदय को प्यारी
रुधिर वेग से कम्पित थर-थर, पकड़ उर्मिला का पल्लव कर
बोले, 'प्रिये, विदा दो हँसकर, संग राम के जाता अनुचर।'
चौदह बरस रहे वे बाहर, बिछुड़े नहीं प्रिया से क्षण भर
सजग उर्मिला थी उर भीतर, मानस की सी उर्मि निरन्तर
स्नेह उर्मिला का चिर निश्छल, नहीं जानता विरह मिलन पल
वह बह-बह अन्तर में अविरल, बनता रहता सेवा मंगल
वह सेवा कर्त्तव्य नहीं है, वह भीतर से स्वतः बही है
हार्दिकता की सरित रही है, जिससे निश्चित हरित मही है
सहज सलज्ज सुशील स्नेहमय, जन-जन के साथी, चिर सहृदय
मुक्त हृदय विनम्र अति निर्भय, जन्म-जन्म का हो ज्यों परिचय
जाते वे सन्मुख प्रसन्न मन, भू पर नत आनन्द के गगन—
बरस गया जिसका ममत्व घन, गौर चान्दनी-सा चेतन तन
ऐसे भू के मानव लक्ष्मण, कभी गा सकूँ उनका जीवन
छू जिनके सेवा निरत चरण, बिछ जाते पथ शूल फूल बन!
राम पतितपावन, दुःखमोचन, लक्ष्मण भव सुख-दुःख में शोभन
वे सर्वज्ञ, सर्वगत, गोपन ज्ञान मुक्त ये पद नत लोचन!

सुमित्रानन्दन पंत

केवट ने चरण पखारे हैं

जिसने चाहा वह पार हुआ, जीवन का सच्चा सार हुआ
प्रभु मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, लघुतम तो कहीं महत्तम हैं
उर में विशाल करुणा सागर, भक्तों हित जीते-हारे हैं
केवट ने चरण पखारे हैं

कोई अभिशापित व्यथित शिला पा राम परस फिर हुई धन्य
भिलनी शबरी ने बेरों से पाया हो जैसे प्रेमजन्य
हे दीनबन्धु! मन कामेश्वर! तुम सेतुबन्ध श्री रामेश्वर!
तारे शरणागत द्वारे हैं
केवट ने चरण पखारे हैं

तुम मानवता के सम्बल हो, जीवन के प्रश्नों का हल हो
आगत भविष्य के कर्णधार, प्यासे मन के गंगाजल हो
तुम शिवशंकर का हो अर्चन, मानवता का पावन दर्पण
हम धारा नहीं किनारे हैं
केवट ने चरण पखारे हैं

बलराम श्रीवास्तव

चित्र साभार : गीताप्रेस गोरखपुर

साहस

जटायु के एक कटे पंख ने दूसरे से कहा—
"होगा तू दाँया पंख
पर रावण का प्रहार पहले मैंने सहा।"
दूसरा बोला—
"तू अभी तक
पहले और बाद के विवाद पर ठहरा है
इधर देख मेरा घाव तेरे घाव से कहीं गहरा है।"

दोनों के लिए ज़्यादा गौरव से भरा था
उनका अपना-अपना बलिदान
पर कुछ ही समय में दोनों का एक स्वर गूंजा—
"हम ख़ुश हैं कि हमारे भीतर
अब नहीं रही उड़ान।"

हवा चलती है
तो पेड़-पौधों पर छितराए
पंखों के नन्हे-नन्हे रेशे डोलते हैं
मानो, कह रहे हों—
जो अन्याय का विरोध करता है
उसके कटे हुए पंख भी बोलते हैं।

आततायी शक्ति का समन्दर
ईमान की छोटी-सी किश्ती से भी हारता है
ओर रावण को राम से पहले
एक परिन्दे का साहस मारता है।

विनय विश्वास

शबरी का भाग्य

सुख ये अपार दु:ख-द्वार आया, क्या करूँ मैं
सत्कार कैसे —ये परीक्षा कड़ी हो गयी
छूने को चरण झुकी, झुकने दिया न मुझे
थाम लिया, ज़िन्दगी ख़ुशी की घड़ी हो गयी
राम के उठाने पर जब मैं उठी, तो मुझे
ऐसे लगा जैसे अपने से बड़ी हो गयी
दूसरों के रास्ते पे चलती रही जो सदा
आज वही अपने पाँवों पे खड़ी हो गयी

साधना को करके भी साध्य नहीं पाते लोग
मैंने साधना की और साध्य वर पा गयी
ऐसा लगा, जैसे सूख गयी थी जो छाती, वही
एकाएक ममता का निर्झर पा गयी
पाने को न कुछ शेष, खोने को न कुछ शेष
ऐसे ही विशेष 'कुछ' की डगर पा गयी
अच्छा हुआ सोने का सिंहासन नहीं है यहाँ
पलकों पे बैठने का अवसर पा गयी

राम ने जो कहके पुकार मुझे 'माँ' तो लगा
काँपने लगी ज़मीन, हिल गया आसमां
सागरों का नीर पिये, ममता के मेघ लिये
देह धरती पे छोड़ दिल गया आसमां
खेत को किसान मिला, राही को थकान मिली
पंछी की उड़ान को ज्यों मिल गया आसामां
धरती हुई मैं, इस धरती पे रोम-रोम
ख़ुशी खिली-खिली देख खिल गया आसमां

राम

विनय विश्वास

शबरी के बेर

अलसा रही थी निशा सुन्दरी 'मधुप' कवि
पल्लव दलों के दल डोलने लगे थे कुछ
झोंके मन्द शीतल समीर सज के समोद
मानव हृदय को टटोलने लगे थे कुछ
घोलने लगे थे श्रवणों में रस तोल-तोल
मधुर स्वरों में खग बोलने लगे थे कुछ
सोए हुए शान्ति से सरों में सकुचे सरोज
धीरे से नयन-पट खोलने लगे थे कुछ

ध्यान हुआ एक प्रिय भक्त की कुटीर यहीं
प्रेम में समोद शबरी के सनने चले
वल्कल-वसन सँवार चलने को साथ
आयुध दो भ्रात ये लखन भनने चले
छत्र बन छा गये विविध बादलों के दल
आगे स्वर्ण-रश्मियों के तान तनने चले
नयनाभिराम सुख धाम रामचन्द्र आज
भक्ति भावना के मेहमान बनने चले

आए हैं अतिथि, शबरी के जगदीश आज
जीवन सफल परिताप लय हो गये
हो ही गयी पूर्ण चिर साध अनुरागिनी की
श्रुति सुधा सिंचित अमृतमय हो गये
कैसे करूँ प्रकट रहस्य दवि-माधुरी का
दिव्यता विलोक, अलकेश नय हो गये
जाग उठी जागृति की ज्योति शबरी के गृह
मानो रवि एक, दूसरे उदय हो गये

देख जगदीश को विराजे कुटिया में आज
जीवन सराहा, हरषा के हूमने लगी
खोयी हुई मानो निधि पाकर, प्रमोद भरे
अंक में छिपाकर नि:शंक घूमने लगी
पोंछ पलकों से ले कुशासन बिछाया शीघ्र
आदर से आरती उतार झूमने लगी
दीन दु:खभंजन, स्वभक्त मनरंजन के
बार-बार चाव से चरण चूमने लगी

आया चेत बोली क्या अतिथि-सत्कार करूँ
होगे निराहार आज हो गयी बहुत देर
बीन के रखे थे कुछ बेरी शीघ्र लाई दौड़
पावो भगवान कहा कोशलेश दिश हेर
देने लगी चाव से मधुर चाख-चाख जिन्हें
खाते राम; हँसते लखन देख मुँह फेर
कौन-सी मिठास से भरे थे शबरी के बेर
खाते न अघाते बेर-बेर मांगते थे बेर

● महावीर प्रसाद मधुप

विभीषण

बिना मौसम हृदय-कोकिल से भी कूजा नहीं जाता
जहाँ अनुराग पलता हो वहाँ दूजा नहीं जाता
विभीषण राम जी के भक्त हैं ये जानते सब हैं
मग़र जो देशद्रोही हो उसे पूजा नहीं जाता

● कविता तिवारी

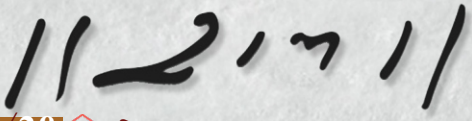

कुंभकर्ण

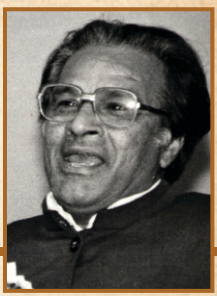

अति मंद-मंद धीरे-धीरे, झूलता हुआ डूलता हुआ।
चल पड़ा पंथ पर काल कुंभ, अपनी गति पर झूलता हुआ॥
अंकुश मारा सूपनखा ने, वह अंकुश भीतर गड़ा रहा।
हाथी टस से मस नहीं हुआ, पग के खंभों पर खड़ा रहा॥
वह कुंभकर्ण का हाथी था, सोते-सोते ही चलता था।
निद्रा की पवन फटकता था, कानों के पंखे झलता था॥
लख काल कुंभ की मंद चाल, चींटे भी तिनका तोड़ गए।
लज्जा के मोर आँख मूंदे, हाथी के आगे दौड़ गए॥
मदमंत्र उनींदे हाथी का, विख्यात विश्व में चरित हुआ।
दो कोस चार दिन में चलकर, समरांगण में अवतरित हुआ॥
सामने खड़ी राघव सेना, अपना रण साज सजाती थी।
बंदर भैरवी गा रहे थे, बंदरियाँ बिगुल बजाती थी॥
परिकर बांधे सायक साधे, तूणीर कसे श्री रामचंद्र।
लख कुंभकर्ण की सेना को, नर वीर हँसे श्री रामचंद्र॥
साँसों की क्रोधित आंधी से, शूर्पण ने खेत बुहार दिया।
भुजदण्ड ठोककर भाई के, रामानुज को ललकार दिया॥
रे नाक बधिक, रे घ्राण व्याध, नथ अवलम्बन हरने वाले।
सुन्दरता के नन्दन वन में, तोते का वध करने वाले॥
रे शेषपुत्र, भूषायी सुन, भूचाल घेर कर लाई हूँ।
मैं काले हाथी पर तेरा, यह काल घेर कर लाई हूँ॥
अंबारी पर खर्राटों में, मेरा जयघोष घहरता है।
यह दानव कुल की ध्वजा नहीं, यह रविकुल केतु फहरता है॥
लछमन ने पटका पाँव, हिला ब्रह्मांड, न डोला कुंभकर्ण।
तुरिया से तन्द्रा में आकर, धीरे से बोला कुंभकर्ण॥
हे लखन तुझे क्या भरी नींद में कोई मत्कण काट गया।

मक्खी आकर भिनभिना गई, या खटमल नींद उचाट गया॥
यौवन की भरी दुपहरी में, क्यों हाथ नींद से धो बैठे।
क्या खाट तुम्हारी टूट गयी, या कहीं बिस्तरा खो बैठे॥
रे अनसोए, उन्निद्र, अभागे तापस तुम सो जाओ रे।
रे घोर अनिद्रा के रुग्णों, पुटपाक नींद का खाओ रे॥
यदि लड़ना है तो सपनों में, लड़कर बल विक्रम अमर करो।
गतिहीन खाट समरांगण में, तुम बैठे-बैठे समर करो॥
हे सूर्यवंश के रामचंद्र, रातों में आकर तो देखो।
निद्रा के कोमल मधुर-मधुर, हाथों में आकर तो देखो॥
युग पलक संधि के पलकों पर, सो जाओ युद्ध विराम करो।
सागर तट पर परियंक तुम्हारा बिछवा दूँ, आराम करो॥
यों कहकर योद्धा हौदे में, धीरे-धीरे पौढ़ने लगा।
नीचे से गद्दा खींच-खींच, अपने ऊपर ओढ़ने लगा॥
सूपा ने गुस्से में आकर, चर-चर गद्दे को फाड़ दिया।
तकिए का झंडा फहराकर, गज के मस्तक पर गाड़ दिया॥
बोली झिंझोड़ कर भाई को, मैं तुम्हें नहीं सोने दूंगी।
गतिहीन नाक समरांगण में, मैं संधि नहीं होने दूंगी॥
सौगंध नाक की, आँखों की, मेरे इस सिर की क़सम तुम्हें।
सौगंध खाट की, तकिए की, भाई बिस्तर की कसम तुम्हें॥
अरि को संगर में मारे बिन, यदि तुम अपनी आँखें मीचो।
लक्ष्मण के लोहू से मेरी, यदि खंडित नाक नहीं सींचो॥
तो तुम्हें शपथ उन सपनों की, जो देखे रातों में, दिन में।
तो तुम्हें शपथ उस करवट की, जो लेते हो नब्बे दिन में॥
सुन शूर्पणखा के कटुक वचन, हनुमत का लोहू खौल गया।
लक्ष्मन के लोचन लाल हुए, राघव का धीरज डोल गया॥
तूणीर त्याग, धनु पर चढ़कर, श्री रामचंद्र के तीर चले।
क्षिद्रा की प्रबल तरंगों से, नभ नीलांचल को चीर चले॥
लख तीर, वीर ने झपकी ली, वाणों के लोचन बंद हुए।
मंदाकिनी की लहरों जैसे, धीरे-धीरे गतिमंद हुए॥
लक्ष्मण ने मारा शक्तिवाण, वह ऊँघ शैल से टूट गया।
हनुमत ने फेंका शैलखंड, खर्राटों का धू फूट गया॥
अब कुंभकर्ण की बारी थी, दानव सेना ललकार उठी।
लो कुंभकर्ण के हाथों में, अंगड़ाई की तलवार उठी॥

ऊँघा रे ऊँघा कुंभकर्ण, रण को निद्रा सूंघने लगी।
शूर्पणखा ने सपना देखा, वानर सेना ऊँघने लगी॥
हाथी पर सोया कुंभकर्ण, घोड़ों पर सोए घुड़सवार।
पैदल भू पर बिस्तरे बिछा, सोए लंबी टांगें पसार॥
सारथी, रथी रथ में सोए, सेना मिल एकाकार हुई।
गज पर पैदल अंबारोही, सब पर निद्रा असवार हुई॥
साँसों के सायक पर चढ़कर, नथुनों के तरकस फूट चले।
सर-सर करते सप्तम स्वर में, खर्राटों के सर छूट चले॥
सुन कुंभकर्ण के खर्राटे, रीछों के छक्के छूट गए।
वानर सेना चिंकार उठी, कानों के पर्दे फूट गए॥
संग्राम सिंधु की लहरों पर, शीतल शुभ शांति सरसती थी।
नीचे सोती दानव सेना, ऊपर से न॥द बरसती थी॥
शूर्पणखा ने चिंघाड़ मारकर, कालकुंभ को भगा दिया।
निद्रावतार का हाथ पकड़, झटके दे दे कर जगा दिया॥
ली कुंभकर्ण ने अंगड़ाई, वातुल वाचाल हुई बहरी।
सूरज की आँखें लाल हुईं, संध्या में बदली दोपहरी॥
मुंद गये राम के कमल नैन, लक्ष्मण की पलकें बंद हुईं।
अंगद के पाँव लगे फिरने, गति हनुमान की मंद हुई॥
सागर पर लेट गयी लहरें, पेड़ों पर पत्ते ढुलक गए।
भू पर ऐसी चींटियाँ चलीं, तिनकों के रोंए पुलक गये॥
नल-नील ऊँघते खड़े-खड़े, सुग्रीव जँभाई लेते थे।
रीछों के पंजे पसर गए, वानर अंगड़ाई लेते थे॥
योद्धाओं ने ली उबासियाँ, मेघों ने उनको लपक लिया।
झपकी ली, उनको तारों ने सोते-सोते ही गपक लिया॥
टुक कुंभकर्ण ने करवट ली, वह काल कुंभ करवटा गया।
टांगों के खंभे उखड़ गए, धरती को धरती चटा गया॥
था चित्त पड़ा नीचे योद्धा, ऊपर हाथी चारों खाने।
शूपणा महावत दूर खड़ी, अपने सिर पर झंडा ताने॥
सिंदूर नींद का पुँछा हाय, रजनी का कंकण टूट गया।
बिस्तर की किस्मत सिकुड़ गयी, सौभाग्य खाट का फूट गया॥
फट गया ढोल खर्राटों का, सपनों का फीका नूर हुआ।
चौखंभे के नीचे दबकर, दोखंभा चकनाचूर हुआ॥

शूर्पनखा महाकाव्य के कुंभकर्ण संर्ग का अंश।

ओमप्रकाश आदित्य

यही रात अन्तिम

यही रात अन्तिम, यही रात भारी
बस इक रात की अब कहानी है सारी

नहीं बन्धु-बान्धव, न कोई सहायक
अकेला है लंका में लंका का नायक
सभी रत्न बहुमूल्य रण में गँवाए
लगे घाव ऐसे कि भर भी न पाएँ
दशानन इसी सोच में जागता है
कि जो हो रहा, उसका परिणाम क्या है
ये बाज़ी अभी तक न जीती, न हारी

वो भगवान-मानव तो समझेगा इतना
कि मानव के जीवन में संघर्ष कितना
विजय अन्ततः धर्मवीरों की होती
पर इतना सहज भी नहीं है ये मोती
बहुत हो चुकी युद्ध में व्यर्थ हानि
पहुँच जाए परिणाम तक अब कहानी
वचन पूर्ण हो, देवता हों सुखारी

समर में सदा एक ही पक्ष जीता
जयी होगी मन्दोदरी या कि सीता
किसी मांग से उसकी लाली मिटेगी
कोई एक ही कल सुहागन रहेगी
भला धर्म से पाप कब तक लड़ेगा
या झुकना पड़ेगा या मिटना पड़ेगा
विचारों में मन्दोदरी है बिचारी

ये इक रात मानो युगों से बड़ी है
ये सीता के धीरज की अन्तिम कड़ी है
प्रतीक्षा का विष और कितना पियेगी
बिना प्राण के देह कैसे जियेगी
कहे रोम-रोम अब तो राम आ भी जाओ
दिखाओ दरस अब न इतना रुलाओ
कि रो-रो के मर जाए सीता तुम्हारी
यही रात अन्तिम, यही रात भारी

रवीन्द्र जैन

रावण

यदि अब राम की शरण में चला गया तो
मुझे मेरे भीतर का पाप मार डालेगा
एकमात्र सधवा बचेगी मेरी पत्नी; तो
शेष विधवाओं का विलाप मार डालेगा
जिनसे सुशोभित थी रावण की राजसभा
उन रिक्त आसनों का शाप मार डालेगा
मृत्यु जो करेगी, वह जग को दिखायी देगा
जीवन तो मुझे चुपचाप मार डालेगा

जिस अपराध से न मुक्त हो सकूंगा कभी
उसको मैं बीच मझधार कैसे छोड़ दूँ
अब मेरा पाप मेरे साथ जग से विदा हो
पाप पर जीवन उधार कैसे छोड़ दूँ
वीर हूँ तो जीतकर जीत त्याग कर दूंगा
युद्ध करने का मैं विचार कैसे छोड़ दूँ
विजयी हुआ तो सिया, राम को ही सौंप दूंगा
अन्यथा मैं मेरा अधिकार कैसे छोड़ दूँ

हारने को कुछ भी बचा नहीं है शेष अब
प्राणप्रिय पुत्र मेघनाद भी चला गया
नयनों से अधरों तलक़ हुआ भावहीन
हर्ष भी चला गया, विषाद भी चला गया
जीत भी गया तो किसको दिखाएगा विजय
हारने का हर अवसाद भी चला गया
रण में मरण का वरण करना ही होगा
रावण ये जानने के बाद भी चला गया

तन अट्टहास करता था निज मूढ़ता पे
मन रो रहा था अपनों के तर्पण को
जिसपे गिरा था उसके कुटुम्ब का रुधिर
चूमने को चला उस भू के कण-कण को
अपनी ही हठ से प्रचण्ड क्रुद्ध हो गया था
राम से नहीं था कोई क्षोभ दशानन को
जिससे हुई थी बन्धु-बान्धवों की देह जीर्ण
भोगने गया था उस बाण की चुभन को

उचक-उचक नभ में कुटुम्ब ढूंढता था
सबको लगा जो अभिमान से भरा हुआ
दस-दस शीश धरती में गड़े जा रहे थे
अपने ही मन से स्वयम् उतरा हुआ
अपने ही हाथों अपना ही यश नष्ट कर
अपने ही आप को बहुत अखरा हुआ
रामजी ने हार-जीत की प्रथा निभाई बस
रावण तो रण में गया ही था मरा हुआ

रावण के व्यक्तित्व में कुछ तो होगी बात।
जिसे तारने जन्म लें, तीन लोक के नाथ॥

चिराग़ जैन

सीता का उलाहना

जब सिद्ध हुआ ही नहीं दोष फिर क्यों जंगल में छोड़ दिया
जो रिश्ता सात जन्म का था, उसको पल भर में तोड़ दिया
उन भूली-बिसरी सुधियों को मैं कैसे पावनतम कह दूँ
हे राम! तुम्हीं बोलो तुमको किस मुँह से पुरुषोत्तम कह दूँ

उस पत्थर बनी अहल्या को तुमने छूकर ही तार दिया
फिर इस सीता को तुमने क्यों बोलो, जीते-जी मार दिया
मेरी ग़लती केवल ये थी, मैंने निज धर्म निभाया था
वनवास मिला था जो तुमको, मैंने भी साथ बिताया था
इस रामराज्य को सोचो तो, मैं कैसे सर्वोत्तम कह दूँ
हे राम! तुम्हीं बोलो तुमको किस मुँह से पुरुषोत्तम कह दूँ

तुम राम कहाँ पहचान सके मिथिला की राजकुमारी को
तुमने वनवासिन बना दिया, सीता जैसी सुकुमारी को
मेरी हालत सुनकर मिथिला मन ही मन सिहर रही होगी
मन बार-बार ये कहता है, मैं आज तुम्हें निर्मम कह दूँ
हे राम! तुम्हीं बोलो तुमको किस मुँह से पुरुषोत्तम कह दूँ

जिस माँ ने मुझको पाला था, वो कितना सिसक रही होगी
यह आग पिता की आँखों में ज्वाला बन दहक रही होगी
सुनकर ये, चांद-सितारे भी अम्बर में सुबक रहे होंगे
ये वृक्ष धरा के, मेरी इस पीड़ा में झुलस रहे होंगे
उस पर ये आशा है राघव, अब भी तुमको प्रियतम कह दूँ
हे राम! तुम्हीं बोलो तुमको किस मुँह से पुरुषोत्तम कह दूँ

गुणवीर राणा

अभिशापित राम

युग-युग का संकल्प अटल था
मुझमें मेरा राम प्रबल था
पग-पग पर जग की मर्यादा
देकर थोड़ा, ले गयी ज़्यादा
भोर नयन भर लाई आँसू, पीड़ा लाई शाम
सिया तेरा अभिशापित है राम

अग्नि-परीक्षा जग का छल थी, पर जग के प्रश्नों का हल थी
फिर भी उस पर प्रश्न उठा है, जो गंगा जैसी निर्मल थी
मैंने घर से उसे निकाला
सागर जिसके लिए खंगाला
लंका जीतने वाला, हारा जीवन का संग्राम
सिया तेरा अभिशापित है राम

बोल रहा पौरुष की भाषा, मेरा राजकुँअर नन्हा-सा
जो प्राणों से भी प्यारा है, आज वही प्राणों का प्यासा
मेरा साहस तोल रहा है
मानो, मुझसे बोल रहा है
जननी की हर इक पीड़ा का पाओगे परिणाम
सिया तेरा अभिशापित है राम

तात मुझे करके वनवासी, आज हुए गोलोक निवासी
मेरे राजकुँअर कुटिया में, मैं हूँ राजभवन का वासी
कहती रघुकुल रीति अभागे
अब तक प्राण नहीं क्यों त्यागे
धरती शायद ठुकरा देगी, जल में चिर विश्राम
सिया तेरा अभिशापित है राम

गजेन्द्र प्रियांशु

रीता जीवन कैसे बीते

सीते! मम श्वास-सरित सीते!
रीता जीवन कैसे बीते

हमसे कैसा ये अनर्थ हुआ
किसलिये लड़ा था महायुद्ध, सारा श्रम जैसे व्यर्थ हुआ
पहले ही दु:ख क्या कम थे सहे, दो दिवस चैन से हम न रहे
सीते! मम नेह-निमित सीते, रीता जीवन कैसे बीते

मर्यादाओं की देहरी पर
तज दिया तुम्हें, देहरी की जगह अंगारे रखे हथेली पर
खामोश रहे सब ऋषि-मुनि, सरयू भी उस पल ना उफनी
सीते! मम प्रेम-तृषित सीते, रीता जीवन कैसे बीते

सबने हमको दोषी माना
कल दर्पण के सम्मुख हमने, निजबिम्ब लखा था अनजाना
हम दोषी से, अपराधी से, जीवित हैं, एक समाधि से
सीते! मम मौन-व्यथित सीते, रीता जीवन कैसे बीते

हम काश कहीं धोबी होते
तज कर चल देते रामराज, जब जी चाहता, हँसते-रोते
लेकिन हम तो महाराज रहे, सिंहासन की आवाज रहे
सीते! मम हृदय-निहित सीते, रीता जीवन कैसे बीते

कम से कम तुम तो समझोगी
अपने राघव की निर्बलता, सब दें, तुम दोष नहीं दोगी
जब वृक्ष उगाना होता है, इक भ्रूण दबाना होता है
सीते मम रामचरित सीते, रीता जीवन कैसे बीते

● राजगोपाल सिंह

राम की जलसमाधि

पश्चिम में ढलका सूर्य
उठा वंशज सरयू की रेती से हारा-हारा, रीता-रीता
निःशब्द धरा, निःशब्द व्योम
निःशब्द अधर; पर रोम-रोम था टेर रहा- 'सीता-सीता!'

किसलिए रहे अब ये शरीर, ये अनाथ मन किसलिए रहे
धरती को मैं किसलिए सहूँ, धरती मुझको किसलिए सहे
तू कहाँ खो गयी वैदेही
वैदेही तू खो गयी कहाँ
—मुरझे राजीव-नयन बोले,
काँपी सरयू, सरयू काँपी
देवत्व, हुआ लो पूर्ण काम, नीली माटी निष्काम हुई
इस स्नेहहीन देह के लिए, अब साँस-साँस संग्राम हुई
ये राजमुकुट, ये सिंहासन, ये दिग्विजयी वैभव अपार
ये त्रियाहीन जीवन मेरा, सामने नदी की अगम धार

मांग रे भिखारी लोक मांग
कुछ और मांग अन्तिम वेला
इन अंचलहीन आँसुओं से, नहला बूढ़ी मर्यादाएँ
आदर्शों के जलमहल बना
फिर राम मिले, न मिले तुझको, कल ऐसी शाम ढले न ढले

ओ खण्डित प्रणयबन्ध मेरे, किस भाँति, कहाँ तुझको जोड़ूँ
कब तक पहनूँ ये मौन धैर्य, बोलूँ भी तो किससे बोलूँ
सिमटे, अब ये लीला सिमटे —भीतर-भीतर गूंजा भर था
छप से पानी में पाँव पड़ा, कमलों से लिपट गयी सरयू

फिर लहरों पर वाटिका खिली, रतिमुख सखियाँ, नतमुख सीता
सम्मोहित मेघबरन तड़पे
पानी घुटनों-घुटनों आया, आया घुटनों-घुटनों पानी
फिर धुआँ-धुआँ, फिर अन्धियारा, लहरों-लहरों, धारा-धारा
व्याकुलता फिर पारा-पारा

फिर एक हिरन-सी किरन-देह दौड़ती चली आगे-आगे
आँखों में जैसे बान सधा, दो पाँव उड़े जल में आगे
पानी लो नाभि-नाभि आया, आया लो नाभि-नाभि पानी
जल में तम, तम में जल बहता
ठहरो, बस और नहीं कहता, जल में कोई जीवित दहता

फिर एक तपस्विनी शान्त सौम्य
धक्-धक् लपटों में निर्विकार, सशरीर सत्य-सी सम्मुख थी
उन्माद नीर चीरने लगा
पानी छाती-छाती आया, आया छाती-छाती पानी
भीतर लहरें, बाहर लहरें, आगे जल था, पीछे जल था
केवल जल था, वक्षस्थल था, वक्षस्थल तक केवल जल था

जल पर तिरता था नीलकमल
बिखरा-बिखरा-सा नीलकमल
कुछ और-और सा नीलकमल

फिर फूटा जैसे ज्योति प्रहर, धरती से नभ तक जगर-मगर
दो टुकड़े धनुष पड़ा नीचे, जैसे सूरज के हस्ताक्षर
बाँहों के चन्दन घेरे से, दीपित जयमाल उठी ऊपर
सर्वस्व सौंपता शीश झुका
लो शून्य राम, लो राम लहर
फिर लहर-लहर, लहरें-लहरें
सरयू-सरयू, सरयू-सरयू
केवल जल ही जल, जल ही जल
तम ही तम, तम ही तम केवल
हे राम-राम, हे राम-राम
हे राम-राम, हे राम-राम

वनवासी राम

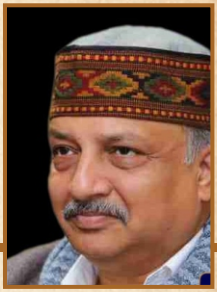

मात-पिता की आज्ञा का तो केवल एक बहाना था
मातृभूमि की रक्षा करने प्रभु को वन में जाना था

किसने गंगातट पर जाकर केवट का सम्मान किया
और निषाद को किसने अपनी मैत्री का वरदान दिया
गिद्धराज को प्रेम-प्यार से किसने गले लगाया था
भिलनी के बेरों को किसने भक्तिभाव से खाया था
वनवासी और दलित जनों पर अपना प्यार लुटाना था
मात-पिता की आज्ञा का तो केवल एक बहाना था

राक्षसराज हुआ धरती पर ऋषि-मुनि सब घबराते थे
दानव उनके शीश काटकर मन ही मन हर्षाते थे
हवन-यज्ञ ना पूर्ण होते गुरुकुल बन्द हुए सारे
धनुष उठाकर श्रीराम ने चुन-चुनकर राक्षस मारे
देव शक्तियों को भारत में फिर सम्मान दिलाना था
मात-पिता की आज्ञा का तो केवल एक बहाना था

वाल्मीकि रत्नाकर होते, रामायण ना कह पाते
तुलसी पत्नी-भक्ति में ही जीवन यापन कर जाते
रामानन्द न सागर होते, रामकथा ना दिखलाते
कलयुग में त्रेता झाँकी के दर्शन कभी न हो पाते
कवियों की वाणी को प्रभु ने धरती पर गुंजाना था
मात-पिता की आज्ञा का तो केवल एक बहाना था

राजेश चेतन

कवि-कुनबा कलैण्डर (अक्टूबर)

1 अक्टूबर	जयन्ती	रामरिख मनहर
	जयन्ती	वीरेन्द्र मिश्र
	जन्मदिन	रामकुमार कृषक
	जन्मदिन	सतीश वर्द्धन
	जन्मदिन	प्रवीण पाण्डेय प्रज्ञार्थु
	पुण्यतिथि	ब्यंकट बिहारी पागल
2 अक्टूबर	जन्मदिन	कुँअर अनुराग
	जन्मदिन	निकुंज शर्मा
4 अक्टूबर	जन्मदिन	अब्दुल जब्बार
	जन्मदिन	पवन जैन
	जन्मदिन	दिनेश याज्ञिक
	जन्मदिन	नम्रता जैन
	पुण्यतिथि	मधुर शास्त्री
5 अक्टूबर	पुण्यतिथि	भगवती चरण वर्मा
6 अक्टूबर	जन्मदिन	सरोजिनी प्रीतम
	जन्मदिन	सौरभकान्त शर्मा
	पुण्यतिथि	ताराप्रकाश जोशी
7 अक्टूबर	जन्मदिन	बाग़ी चाचा
	जन्मदिन	दिव्या नेह
8 अक्टूबर	जन्मदिन	विनोद पाल
10 अक्टूबर	जन्मदिन	दुर्गादान गौड़
	जन्मदिन	सूर्यकुमार पाण्डेय
	जन्मदिन	विनय शुक्ल विनम्र
11 अक्टूबर	जयन्ती	कुमार शिव
	जन्मदिन	पी के आज़ाद
	जन्मदिन	हरीश हिन्दुस्तानी
12 अक्टूबर	जयन्ती	निदा फ़ाज़ली
	पुण्यतिथि	रामेश्वर शुक्ल अंचल
15 अक्टूबर	जन्मदिन	कृष्णमित्र
	जन्मदिन	चकाचौंध ज्ञानपुरी
	पुण्यतिथि	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
17 अक्टूबर	जयन्ती	नारायण दास निर्झर
20 अक्टूबर	जन्मदिन	भावना तिवारी

कवि-कुनबा कलैण्डर (अक्टूबर)

21 अक्टूबर	जयन्ती	नीरज पुरी
22 अक्टूबर	जयन्ती	अदम गोंडवी
24 अक्टूबर	जन्मदिन	विनोद राजयोगी
25 अक्टूबर	पुण्यतिथि	साहिर लुधियानवी
28 अक्टूबर	जन्मदिन	आश करण अटल
	पुण्यतिथ	श्रीलाल शुक्ल
29 अक्टूबर	जन्मदिन	धनंजय सिंह
	पुण्यतिथि	शैल चतुर्वेदी
30 अक्टूबर	जयन्ती	जगन्नाथ विश्व
	जन्मदिन	कृष्ण कल्पित
	जन्मदिन	प्रभाकिरण जैन
	जन्मदिन	अंजू जैन
	जन्मदिन	सोनरूपा विशाल
31 अक्टूबर	जन्मदिन	विशाल समर्पित
	पुण्यतिथि	के पी सक्सेना

कवि-सम्मेलन संग्रहालय

श्री मधुर शास्त्री काव्यपाठ करते हुए

आज़ादी की दुम

रावण का वध करके राम अयोध्या लौट आए। युद्ध में हनुमान ने जौहर दिखाने के उपलक्ष्य में मन्त्री-पद लेने से साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि वे शेष जीवन जंगलों में बिताएंगे। यह कहकर हनुमान चले गये। देखते-देखते 25 वर्ष बीत गये। हुनमान अब बूढ़े हो चले थे। वृक्षों पर जाकर फल तोड़ने में उन्हें काफ़ी कष्ट होता था। अचानक उनको ख़बर मिली कि अयोध्या में आज़ादी की रजत जयन्ती मनायी जा रही है। इसमें राम-रावण युद्ध में भाग लेने वालों को एक ताम्रपत्र तथा 200 रुपये मासिक पेन्शन दी जाएगी। हनुमान ने सोचा, चलो बुढ़ापे का इन्तज़ाम तो हो गया। उन्होंने भी पेन्शन के लिए आवेदन कर दिया। काफ़ी दिनों तक पेन्शन की स्वीकृति न मिली तो हनुमान ने स्वयम् अयोध्या जाने का निश्चय किया।

पच्चीस वर्षों में अयोध्या काफ़ी बदल गयी थी। कुछ परिचित बन्दर मिनिस्टर बने घूम रहे थे। उन्होंने हनुमान को पहचानने से इनक़ार कर दिया। इतनी-सी बात के लिए राम के पास जाना उचित नहीं, यह सोचकर वे ख़ुद 'स्वतन्त्रता सैनिक पेन्शन विभाग' के दफ़्तर पहुँचे और अपनी पेन्शन के बारे में पूछताछ की। बाबू ने कहा - "आपका आवेदन ही नहीं आया।"

"मग़र मैंने तो रजिस्ट्री से भेजा था।" एक्नॉलेजमेंट दिखाते हुए हनुमान ने कहा।

चपरासी ने हनुमान को एक तरफ़ ले जाकर समझाया कि जब तक अर्ज़ी पर वज़न नहीं रखोगे, तब तक समझो अर्ज़ी आयी ही नहीं।

"मग़र ये वज़न क्या होता है?"

चपरासी ने हँसते हुए कहा— "बन्दर हो ना, तुम नहीं समझोगे। तुम्हारे पास पैसे तो नहीं होंगे। ऐसा करो, तुम कुछ फल तोड़कर बाबू को दे दो। इसे ही सरकारी ज़ुबान में वज़न कहते हैं।"

"मैं तो अब बूढ़ा हो गया। राम-रावण युद्ध में तो मैंने पहाड़ उठाया था, पर अब तो छोटे-से पेड़ पर भी नहीं चढ़ सकता। इसीलिए तो पेन्शन के लिए अर्ज़ी दी है।" —हनुमान ने अपनी विवशता प्रकट की।

चपरासी कुछ देर सोचता रहा। अचानक उसकी आँखों में चमक आ गयी। वह बोला— "एक उपाय है। आजकल फॉरिन में बन्दरों की दुम की बड़ी मांग है। तुम दुम का कुछ हिस्सा काटकर बाबू को दे दो। अर्ज़ी आगे बढ़ जाएगी। और हाँ, मैंने उपाय बताया है, सो मुझे भी चाय पीने के लिए चार इंच का टुकड़ा ज़रूर देना।"

हनुमान के तन-बदन में आग लग गयी। बन्दर को अपनी पूँछ उतनी ही प्यारी होती है, जितनी आदमी को अपनी मूँछ। हनुमान सोचने लगे, इसी दुम के अपमान के कारण मैंने लंका में आग लगा दी थी। पर यह तो अपने राम की अयोध्या है, जी में तो आता है कि सारे बाबुओं को उठाकर फेंक दूँ। मग़र विवश हूँ। फिर आजकल कानून हाथ में लेना भी तो जुर्म है। 'मजबूरी का नाम विभीषण' —यह प्रचलित कहावत याद आते ही वे चुपचाप सिर झुकाए बाबू के पास पहुँच गये। उनकी दुम कुछ छोटी हो गयी और अर्ज़ी कुछ आगे सरक गयी। वहाँ का बाबू पहले से ही कैंची लिए बैठा था।

इस तरह जैसे-जैसे दुम कटती गयी वैसे-वैसे हनुमान वल्द पवन की अर्ज़ी आगे बढ़ती गयी। और जब तक अर्ज़ी पर पेन्शन की मंजूरी की मोहर लगी तब तक हनुमान बिन दुम के हो गये। जो दुम रावण-राज्य में भी सही-सलामत रही वह रामराज्य में कट गयी।

हनुमान जाते-जाते क्रोध की धमकी दे गये कि मैं इस ऑफिस के भ्रष्टाचार की कहानी अवश्य राम तक पहुँचाउंगा। मेरा नाम हनुमान है, हनुमान... रामभक्त हनुमान। सारे ऑफिस में खलबली मच गयी। आख़िर एक्शन ऑफिसर ने सारे क्लर्कों को समझाया और कहा— "तुम डरो नहीं, तुमने जो कुछ किया 'रघुकुल रीति सदा चलि आई' के अन्तर्गत अर्थात् परम्परागत किया है। मैं इस बन्दर को देख लूंगा।"

अगले दिन हनुमान जालसाजी के आरोप में गिरफ़्तार हो गये। उन पर आरोप था कि इस बन्दर ने हनुमान के नाम पर पेन्शन लेने का प्रयत्न किया है। जबकि ये हनुमान नहीं है। सबूत में बताया गया कि हनुमान के एक लम्बी दुम थी, और इस बन्दर के दुम नहीं है। अतएव यह हनुमान नहीं है।

● घनश्याम अग्रवाल

समाचार यह है कि...

05 सितम्बर, नयी दिल्ली। संत परमानन्द अस्पताल सभागार में जैमिनी महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें श्री दुर्गादान सिंह गौड़ को राजस्थानी भाषा में विशेष योगदान के लिए जैमिनी सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री चिराग़ जैन की (ई-बुक) शब्द-यात्रा का लोकार्पण भी हुआ। तदोपरान्त लोकभाषा कवि-सम्मेलन में सर्वश्री दुर्गादान गौड़ (हाड़ौती), यूसुफ़ भारद्वाज (हरियाणवी), श्याम सुंदर अकिंचन (ब्रजभाषा) और विकास बौखल (अवधी) ने काव्य-पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेंद्र शर्मा ने की और संचालन किया डॉ. विनय विश्वास ने। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री महेन्द्र अजनबी ने कीर्तिशेष श्री जैमिनी हरियाणवी की कविता का पाठ किया तथा कार्यक्रम का समापन करते हुए श्री अरुण जैमिनी ने भी अपने पिता श्री जैमिनी हरियाणवी की एक कविता सुनाकर उन्हें नमन किया।

11 सितम्बर, प्रयागराज। हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर मेजा ऊर्जा निगम प्राइवेट लिमटेड की ओर से कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, अनिल चौबे, गजेन्द्र प्रियांशु, भुवन मोहिनी तथा विकास बौखल ने काव्यपाठ किया।

14 सितम्बर, प्रयागराज। हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रयागराज आयकर विभाग की ओर से कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री विनीत चौहान, श्लेष गौतम, पूनम वर्मा, प्रकाश तथा डॉ. गीता सिंह आदि ने काव्यपाठ किया।

18 सितम्बर, इथोपिया। भारतीय दूतावास, एडिस अबाबा की ओर से हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर पहली बार कवि-सम्मेलन का अयोजन किया गया जिसमें भारत से श्री अरुण जैमिनी तथा सुश्री मुमताज़ नसीम ने भाग लिया।

19 सितम्बर, तंज़ानिया। भारतीय उच्चायोग, एसवीसीसी और हिन्दी के लिए तंज़ानिया में कार्यरत संस्थाओं ने मिलकर हिन्दी दिवस का आयोजन किया जिसमें साठ से अधिक प्रतिभागियों ने हिन्दी की विविध विधाओं का प्रस्तुतिकरण किया। इसमें तंज़ानियन बच्चों द्वारा हिन्दी में प्रस्तुति ख़ूब सराही गयी। इस अवसर पर श्रीमती सविता मौर्या को इस वर्ष का अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान प्रदान किया गया।

22 सितम्बर, कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की ओर से आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, दिनेश रघुवंशी, महेन्द्र शर्मा, मास्टर महेन्द्र तथा प्रीति अग्रवाल ने भाग लिया।

25 सितम्बर, नयी दिल्ली। इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में राष्ट्रीय सहकारिता सम्मेलन के अंतर्गत वीर-रस कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। भव्य सभागार में आयोजित हुए इस कवि-सम्मेलन में सर्वश्री डॉ. हरिओम पँवार, विनीत चौहान, गजेन्द्र सोलंकी तथा कविता तिवारी ने काव्यपाठ किया।

27 सितम्बर, सिलीगुड़ी। जेपी शक्तिमान सीमेंट की डीलर्स मीट में कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, चिराग़ जैन, मनीषा शुक्ला तथा ओम रायज़ादा ने काव्यपाठ किया।

28 सितम्बर, नयी दिल्ली। आयात एवम् निर्यात आयुक्तालय में हिन्दी पखवाड़े का समापन कवि-सम्मेलन के साथ किया गया, जिसमें सर्वश्री दिनेश रघुवंशी, महेश गर्ग बेधड़क तथा चिराग़ जैन ने काव्यपाठ किया।

29 सितम्बर, जबलपुर। पश्चिम मध्य रेलवे के राजभाषा विभाग ने हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें सर्वश्री सुदीप भोला, तरुण जैन, आशीष सोनी तथा उमेश ओज ने काव्यपाठ किया।

सिकंदराराऊ। सरला नारायण ट्रस्ट द्वारा चलाये जा रहे 'प्रयास' के सीज़न पाँच के फाइनल में झारखण्ड के **विद्या वैभव भारद्वाज** को विजयी घोषित किया गया। ज्ञात हो कि लगातार पाँच वर्षों से 'प्रयास' के अन्तर्गत एक ऑनलाइन काव्य प्रतियोगिता करायी जाती है, जिसमें प्रतिमाह दिये गये विषय पर गीत लिखना होता है। नौ माह तक लिखने के बाद सेमी फाइनल राउण्ड होता है। फाइनल में कविताओं के साथ उनकी गीत गायन कला को भी दृष्टिगत रखते हुए उनका ऑडियो भी मंगवाया जाता है। जिसका लेखन और प्रस्तुति दोनों ही श्रेष्ठ होते हैं, उसे विजयी घोषित कर दिया जाता है। सीज़न 5 का विजेता गीत अधोलिखित है—

चंद्रगुप्त तुम बनो पाटलिपुत्र के नायक
देता हूँ गुरुमंत्र इन्हें तुम भूल न जाना

धीर, धृति धारण कर धर्म निभाना होगा
प्रजापति बनकर किंचित अभिमान न करना
मूल जीवित रखता है हर पत्ती, डाली को
फल की लालसा में समूल अवसान न करना
चंद्रगुप्त तुम बनो सुशासन के उन्नायक
जो भी हो संभव हित उन सबको अपनाना

मिले न्याय, सम्मान जो याचक बनकर आयें
बनो सूर्य-सा जो प्रकाश भर दे घर-घर में
तुम उनके साथी हो, यह विश्वास जगाओ
सुख में साथ रहो न, रहो दु:ख के अवसर में
चंद्रगुप्त तुम बनो दु:खीजन के सुखदायक
सुख हो या दु:ख हो अपना कर्त्तव्य निभाना

जैसे इस धरती से जल लेता है दिनकर
जैसे फूल कोई चुन ले जाये मधुबन से
वैसे ही कर लेकर जनता को यूँ देना
जैसे पूरी धरा भीग जाती सावन से
चंद्रगुप्त जब बनो प्रजाहित के निर्णायक
घनानंद के अपकर्मों को मत दुहराना

आपका दुलार चाहिए

कचपन
किलकारी कविता की

कचपन प्रतियोगिता की वोटिंग जारी है। यूट्यूब पर इन सभी वीडियो को अपलोड करने के बाद से अनवरत उनके व्यूज़ तथा लाइक्स बढ़ते जा रहे हैं। 15 अक्टूबर तक की स्थिति के अनुरूप वीडियो सॉर्टलिस्ट करके निर्णायक मण्डल के पास भेजी जाएंगी।

कचपन का निर्णय कुछ भी हो, लेकिन कविग्राम को इस बात से संतोष है कि इस प्रतियोगिता के माध्यम से सबसे नयी पीढ़ी के द्वार तक कविता के संस्कार बोने में हम सफल रहे हैं। इस प्रतियोगिता के माध्यम से हमें ज्ञात हुआ कि आम जन में सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों की फेहरिस्त में जो प्रथम चार नाम हैं उनमें क्रमशः सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान तथा हरिवंश राय बच्चन के नाम अग्रणी हैं।

हमें भारत ही नहीं, विदेशों में रहने वाले भारतीयों की भी प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई हैं। कविग्राम इन सभी प्रविष्टियों के लिए अपने प्रत्येक पाठक का आभार व्यक्त करता है तथा आपसे अपेक्षा करता है कि समय निकाल कर यूट्यूब पर उपलब्ध इन नन्हे-नन्हे बच्चों के काव्यपाठ पर प्रतिक्रिया अवश्य दें। जो वीडियो आपको अच्छी लगे, उसे अपने मित्रों तक अग्रेषित करें, ताकि श्रेष्ठ प्रतिभाओं के चयन में आपका भी सहयोग कविग्राम को मिल सके।

कचपन के माध्यम से हमें पता चला कि हिन्दी के प्रति नयी पीढ़ी को आकृष्ट करने के लिए काग़ज़ी ख़ानापूर्ति करने की बजाय हिन्दी की रोचकता से नौनिहालों को परिचित कराया जाना अधिक कारगर सिद्ध होगा।

प्रिय पाठको!

हमें आपसे जुड़े हुए एक वर्ष से अधिक का समय हो गया है। इस बीच आपका 'कविग्राम' एक ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत हो चुका है।

कवि-सम्मेलन तथा कविता के इस आश्रम में कचपन, पुराने चावल, संग्रहालय, प्रकाशन, प्रोडक्शन तथा अन्य अनेक प्रकल्प चल रहे हैं। कविग्राम के इस प्रांगण में आपकी सहभागिता अपेक्षित है। आप इस पत्रिका को अधिकाधिक लोगों तक प्रेषित करें ताकि अधिक से अधिक लोग इस कार्य से जुड़ सकें और हिन्दी कविता की वाचिक परम्परा बलवती हो सके।

पत्रिका प्रेषित करने में हमारी काफी ऊर्जा व्यय होती है। यदि आप इस कार्य में हमारा सहयोग करने लगेंगे तो हम आपके आभारी होंगे। कविग्राम की वेबसाइट **KAVIGRAM.COM/PATRIKA** से भी आप पत्रिका को डाउनलोड कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त टेलीग्राम, ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब से भी यदि आप जुड़ेंगे तो सूचनाओं के संप्रेषण में हमें सुभीता रहेगा।

कविग्राम पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया का कोई आईकॉन बना दिखे वह एक **सोशल मीडिया लिंक** है। उसे स्पर्श करने पर आप उस पृष्ठ से सम्बद्ध इंटरनेट पेज पर पहुँच जाएंगे।

यदि आप लेखक हैं तो अपनी रचना केवल कविग्राम की ईमेल पर भेजें। व्हाट्सएप पर प्रेषित की गयी रचना स्वीकार नहीं की जायेगी। पद्य का विषय कुछ भी हो सकता है किन्तु गद्य केवल कवि-सम्मेलन, कवि-जीवन तथा काव्य के इर्द-गिर्द ही स्वीकार किया जायेगा। रचना प्रकाशित न होने पर सम्पादक मण्डल उसके अस्वीकार किये जाने का कारण बताने के लिये बाध्य नहीं होगा।

कविग्राम के पिछले अंक पढ़ने के लिये अंक को स्पर्श करें